वरुण सदन गीत

वरुण देव सागर सागर में
लहर लहर पर मुस्काता है।
नदियों से जल ले लेकर यह,
अम्बर तक फिर पहुँचाता है।।
पूर्ण चन्द्र को देख वरुण का,
हदय खुशी से भर जाता है।
पुत्र मिलन की उत्कण्ठा में
मन में ज्वार उमड़ आता है
स्वार्थ त्याग संग्रह करता है,
भू का भूषण बन जाता है।।
जग में खुशियाँ बाँट–बाँट कर,
जन के मन में बस जाता है।
कर्म क्षेत्र हो धर्म क्षेत्र हो,
हर वरुणी आगे रहता है।
मानवता के लिए स्वयं ही,
सबका दुःख दर्द सहता है।।
वरुण सदन सारे जग भर को
प्रेम विनय सब सिखलाता है।
जीओ खुद, जीने दो सब को,
यह सन्देश सुना जाता है।

सत्यकाम यादव
(भूतपूर्व शैक्षणिक प्रभारी)